IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महाराजा रणजोत सिंह के समय भाहरी केन्द्र

Dr. Rippendeep kaur
Assistant Professor
Department of History
Bhag Singh Khalsa College for Women
Kala Tibba, Abohar , Punjab

Abstract

रणजीत सिंह के इतिहासकारों ने उसके साम्राज्य के शहरी केन्द्रों अर्थात शहरों के विरासत और उनके द्वारा उस समय की अर्थव्यवस्था में पाए योगदान की तरफ भी ध्यान दिया है। मुगल साम्राज्य के समय शहरों और कस्बों का पतन होना शुरू हो गया था। परन्तु रणजीत सिंह की सिक्ख हुकूमत की स्थापना के साथा अनेकों पुराने केन्द्र फिर से स्थापित होने लगे थे। बहुत सारे दस्तकार कारीगर गांव छोड़कर पास के कस्बों में आ बसे थे। जिस करके शहरी केन्द्रों का विस्तार हुआ था।

रणजीत सिंह के साम्राज्य के विस्तार के साथ साथ ही शहरों और कस्बों का भी विस्तार हुआ था। बहुत सारे प्र"ाासनिक केन्द्रों को परगने के हैड कुआटरों या सूबेदारों के हैड कुआटरों से कायम रखा गया। मुल्तान, श्रीनगर और पे"ाावर बड़ी राजधानियों को फिर स्थापित किया गया। लाहौर में बड़े पैमाने पर रूह फूंक दी गयी। वजीराबाद, गुजरात, सियालकोट जैसे कस्बे रणजीत सिंह के राज्य में ज्यादा बढे फूले। हरीपुर जैसे कई नये कस्बे भी हौंद में आए। अमृतसर रणजीत सिंह के राज्य का ही नही बल्कि उत्तर प"िचम क्षेत्र का सबसे बड़ा शहर बन गया। रणजीत सिंह के समय ही लाहौर सूबे में ही 20 शहरों और 50 कस्बों का जिक्र आता है।

Keyword :- 1. खालसा राज के प्रसिद्व शहर 2. शहरों में बाजार 3. .कटड़े 4. बाग 5. शहरों का प्रसिद्व व्यापार

अमृतसर

अमृतसर शहर गुरू रामदास जी ने बसाया था। गुरू अर्जुनदेव जी ने यहां रहते हुए कार्यो को सम्पूर्ण करवाया था। गुरू जी ने 52 व्यापारियों को जगह जगह मंगवा कर गुरू का बाजार बसाया और आ"ाीवाद दिया था। " व्यापार में उनको सदा बढोतरी ही होगी। " यह बाजार अब तक भी मौजूद है। मिसल काल समय अमृतसर शहर का व्यापार और रौनक दिनों दिन बढती गई। मिसलदार अपने इलाकों में कर वसूलते थे। बाद में रणजीत सिंह के अधीन आने के साथ अमृतसर शहर का प्र"ाासन भी रणजीत सिंह के अधीन आ गया था। महाराजा ने अमृतसर को गर्मियों की राजधानी बनाया। वह आप 3–4 महीने यहां रहा करते थे। जिस करके इस शहर की रौनक बढ़ गई। वह यूरोपियन व्यापारियों का स्वागत इसी नगर में करते थे।

अमृतसर शहर की मौजूदा प्रतिष्ठा महाराजा रणजीत सिंह के शहरों को प्रफुल्लित करने के यत्नों का ही परिणाम है। शेर–ए–पंजाब की यह दिली इच्छा थी कि अमृतसर का जैसे धार्मिक रूतबा अतिअंत ऊंचा है। इसी तरह ही यह शहर व्यापार और दस्तकारी में भी पंजाब में अदुती बन जाए। महाराजा रणजीत सिंह सदा अपने सरदारों को प्रेरणा देते है कि वह अमृतसर की प्रफुलता के महान कार्यो में ज्यादा से ज्यादा भाग ले। महाराजा की इस शुभ इच्छा को पूरा करने के लिए ही उनके कई नामी सरदारों ने अपने घर यहीं बना लिये थे। यहां कई हवेलियां, कटड़े, बाजार बसाकर और बाग लगाकर यहां की रौनक बढाई गई। दरबारियों द्वारा जो कटड़े आबाद किये गये थे। वह अब तक भी कई नामों के साथ प्रचलित है जैसे कि कटडा भाई संत सिंह, कटड़ा कंवर खड़क सिंह, कटड़ा निहाल सिंह, कटड़ा कर्म सिंह, कटड़ा मोती राम, कटड़ा कंवर शेर सिंह और कटड़ा गरबा सिंह।

रणजीत सिंह के समय यहां कई बाग लगाए गए। जैसे बाग गुरू, बाग अकालियां, बाग बेली राम, बाग देसा सिंह, बाग गुरूमुख सिंह, ज्ञानी , बाग जमांदा खु”ाहाल सिंह, बाग समुद्र क”मीरी और राम बाग आदि। रामबाग सबसे ज्यादा शानो शौकत वाला था। रणजीत सिंह ज्यादातर यहां आकर ही ठहरते थे।

रणजीत सिंह के समय अमृतसर में व्यापार की बहुत बढोतरी हुई थी। व्यापारियों की सुरक्षा का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। यहां का व्यापार और दस्तकारी थोड़े ही समय में सारे पंजाब के शहरों में पहले नम्बर पर पहुंच गए। अमृतसर की शालों का व्यापार केवल पंजाब या हिन्दुस्तान की हदों तक नही होता था बल्कि यहा फ्रांस और इंग्लैण्ड से आगे लगभग सारे यूरोप में फैल गया था। 1833 ई. में जब क”मीर में काल पड़ा तब महाराजा रणजीत सिंह ने शाले बनाने वाले कारीगरों को अमृतसर में सहुलियतें देकर आबाद किया।॥ यह कारीगर अपने संदों के साथ आए और इन्होने अमृतसर में शाल के व्यापार में काफी बढोतरी की । अमृतसर शाल के व्यापार के लिए बड़ी प्रसिद्वता रखता है। कच्चा रे”ाम यहां बुखारा, चीन , अफगानिस्तान और क”मीर से बहुत बड़ी मात्रा में पहुंचाता था। इसको धोकर कई प्रकार के रंगों में रंगा जाता था कि वह कभी भी नही उतरता था। अमृतसर का रे”ामी कपड़ा बहुत प्रसिद्वता प्राप्त कर चुका था। खास करके गुलबदन, गुलबरा और दरियाई और खेस आदि सारे दे”ाों में प्रयोग किए जाते थे।। अमृतसर में पीतल और कांसी के बर्तनों का व्यापार ऊंचाई तक पहुंच गया।

इसके अलावा अमृतसर हींग, जीरा, बादाम, पिस्ता, अखरोट और सूखे मेवे की बहुत भारी मण्डी मानी जाती थी और यहां से ही जिनस दूर दूर तक भेजी जाती थी। अमृतसर की जड़ी बूटियों और इनसे बनी औषधियां सब तरह का करियाना यहां से मिलता था। अमृतसर में ही खालसा राज्य के सिक्के, रूपये, पैसे आदि तैयार करने के लिए बहुत बड़ी टकसाल थी।

जे.कमांड

”अमृतसर पंजाब का सबसे बड़ा दे”ा है। इसकी आबादी मेरे अंदाजे अनुसार लाख से दो लाख है। मैने जितने भी शहर अंग्रेजों के इलाके में देखे थे उनसे से अमृतसर की रौनक सबसे ज्यादा है। पहला शहर है जिसमे मैने उन्नति के चिन्ह देखे है। “

याकोमा जब 1831 में अमृतसर पहुंचा तो उसने इस नगर को बहुत आराम से देखा और लिखा–

” अमृतसर शहर की रक्षा के लिए रणजीत सिंह ने 12 दरवाजे बनवाए है। इनके साथ साथ पहरेदारों के रहने के लिए जगह जगह बुर्ज बनाए गये थे। यहां के बाजार की सड़के बनारस से चौड़ी थी। व्यापारियों

के घर पक्की हुई ईंटों के बने होते थे। यहां के म”াहूर सरदारों के निवास 3–4 छतों वाले थे और इन पर बहुत सुन्दर चित्रकारी का काम किया हुआ है। यहां सिक्ख, हिन्दु और मुसलमान आपस में मिलकर रहते थे। बड़े बड़े लाभ वाले काम सिक्खों के हाथ में होते थे। “

बर्नज

” अमृतसर लाहौर से व्यापार और दस्तकारी की दृष्टि में सबसे बड़ा शहर था। इसके साथ ही व्यापार की मण्डी सारे हिन्द मे और कही नही है। “

एक और समकालीन इतिहासकार गणे”ादास वड़ेरा अपनी पुस्तक ” चार बाग पंजाब “ में लिखता है कि –

” आज सारे पंजाब में अमृतसर जैसा कोई शहर नही है। सब दे”ाों से सौदागर यहां आबाद हुए थे। लाहौर में बहुत सारे खत्री अमृतसर आकर बस गये थे। अमृतसर के साहूकार बहुत अमीर थे। रणजीत सिंह ने अमृतसर को एक बहुत बड़ा व्यापार का केन्द्र बनाया है। अमृतसर लाहौर से बड़ा शहर है। सारे पंजाब की दौलत यहां इकट्ठी हुई लगती है। अमृतसर पंजाब में सबसे ज्यादा रौनक वाला है। हर बाजार भारत की बहुत सुन्दर कीर्ति को प्रगटाता है। जो बेचने के लिए रखी है।

महाराजा रणजीत सिंह ने इसके अलावा अपने अधीन अन्य शहरों के विकास में भी योगदान पाया।

लाहौर

लाहौर बारे अलग अलग इतिहासकारों ने अपनी लिखतों में बहुत ही खोज भरे ख्याल प्रकट किये है। पुरातन लिखतों में लोहपुर लाहौर का उसारा, महाराज रामचन्द्र का जेठा सुपुत्र, ”लहु” बताया गया है। लाहौर में बहुत समय इस्लामी राज कायम रहा॥ सिक्ख वं”ा द्वारा 1762 में लाहौर पर कब्जा किया गया और 1848 ई. तक लाहौर सिक्खों के कब्जे में ही रहा। 1849 ई. में लाहौर पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। महाराजा रणजीत सिंह ने खालसा समय लाहौर को ही अपनी राजधानी बनाया था। लाहौर का निवास अमृतसर से आधा था। यहां व्यापार और दस्तकारी भी अमृतसर के मुकाबले में बहुत कम थी। फिर भी यहां अफगान क”मीरी, ईरानी, यहूदी और अमरीकन आदि विदे”ाी व्यापारी आते थे। बर्नज जब 1831 ई. में लाहौर पहुचा तो उसने अपनी लेखनी में कहा –

”यह पुरातन राजधानी पूर्व से पि”चम की तरफ कोई 5 कोस की लम्बाई और 5 कोस की चौड़ाई में फैली हुई है। यहां के घरों की छते पक्की इंटों की थी। लाहौर के बाजार को देखकर यह कई ज्यादा धनाढ शहर दिखाई नही देते। क्योंकि पंजाब का व्यापार अमृतसर ने बहुत खींच लिया था। “

याकोमा के अनुसार

” लाहौर को देखकर प्रतीत होता है कि मुगल हुक्मरान लाहौर से बाहर बसते थे। महाराजा रणजीत सिंह का शाही महल किले के अन्दर था। किले के अन्दर और कई शाही इमारतों और बगीचे थे। “

मुल्तान

खालसा राज के समय प्रसिद्ध शहरों में से तीसरा शहर मुल्तान था। महाराजा रणजीत सिंह ने जब से मुल्तान पर कब्जा कर लिया। तभी से ही यहां के व्यापार में बहुत बढोतरी हुई। मुल्तान की धरती भी बहुत उपजाऊ थी। खालसा राज के समय निकाली गई नहरों करके यहां की उपज में बहुत बढोतरी हुई थी। शेर–ए–पंजाब हजारों रूप्ये का कपड़ा मुल्तान से खरीदता था। जिस करके यहां के दस्तकारों का हौंसला दिन प्रतिदिन बढता जाता था। दस्तकारी पर खालसा राज्य के समय बहुत कम चुंगी कर लिया जाता था। यहां का सराफा, हुंडी (चिट्ठी का भुगतान) सारे हिन्द और अफगानिस्तान मे बिखरा हुआ था। एक प्रसिद्ध पात्र मुल्तान के बारे में लिखता है –

" यह शहर तीन कोह के घेरे में बिखरा हुआ है। इसके चारों और ऊंची दीवार खींची हुई है। शहर में एक पुराना बड़ा किला है। यहां के रहने वालो की गिनती 60000 है। इसमें 40000 मुसलमान और 20000 हिन्दू थे। यहां के रहने वालो का ज्यादा भाग जुलाहों और अंग्रेजो का है और यहां का पट्ट का बना हुआ कपड़ा जिसको खेस कहते है दूर दूर तक प्रसिद्ध है। यहां की लुंगियां और रे"ामी कपड़े को दूर दूर तक हिन्दू खुरासान, अफगानिस्तान और बुखारे में बहुत खपत होती है।"

पे"ाावर

खालसा राज के प्रसिद्ध शहरों में पे"ाावर को पुरातन, एतिहासिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से बहुत महत्व प्राप्त है। पुराने समय में इस शहर को शहं"ााह की महान राजधानी होने का मान प्राप्त था। पुरानी लिखतों में इस राजधानी का नाम पुरसपुर लिखा मिलता है। मौर्य राज के समय भी हमें पे"ाावर राज के बारे जानकारी मिलती है। कनिष्क ने भी इसको अपनी राजधानी बनाया था। 1585 ई. में जब अकबर बाद"ााह क"मीर से वापिस आए तो वह कई दिनों के सफर के बाद पहाड़ी रास्तों और जंगलों से निकलकर पुरसपुर के रमणीक शहर के पास पहुंचा तो उसने इसको पे"ाावर कहा अर्थात सरहद पार पहुंचने के सामने आने वाले शहर। पे"ाावर पर बहुत समय इस्लाम हुकूमत रही थी। लम्बे समय के संघर्ष के बाद खालसों ने क"मीर की तरह ही अफगानों से यह फतेह करके दिया खैबर राज तक खालसा राज में मिलाया था। ए"िाया महाद्वीप का यह पुरातन शहर व्यापारिक दृष्टिकोण से बहुत मोहब्बत रखता था। यहां के व्यापारी बुखारा, बदखसा और लदाख आदि दे"ाों के साथ व्यापार करते थे।

खालसा राज्य के समय यहां हथियार बनाने का बहुत बड़ा कारखाना था। जिसमें खालसा फौज के लिए बन्दूके ढाली जाती थी। पे"ाावर दस्तकारी के लिए भी बहुत प्रसिद्ध हो गया था। दस्तकारी वि"ोष करके गलीचे, कंघीया, मिटटी के बरतन, अचार के लिए मरतबान, फूलदान, प्याले, काठियां, चमड़े के बक्से, जूतियां, चावल वि"ोष करके प्रसिद्ध थे।

श्री नगर (क"मीर)

श्रीनगर संसार के महान सुन्दर शहरों में से एक है। इसको दो पहाड़ों नें दोनो तरफ घेरा डाला हुआ था। श्रीनगर का अर्थ है " बरकत वाला शहर " श्रीनगर 1960 ई. से क"मीर की राजधानी चली आ रही है। रणजीत सिंह ने जब क"मीर पर अधिकार किया उसके बाद यहां की दस्तकारी में बहुत बढोतरी हुई। खालसा राज में क"मीर के बहुत सारे कारीगरों को रोजगार दे दिया गया। यहां की चांदी और चित्रकारी और बर्तनों व गहने बनाने वाले सुनियारों और चित्रकारी की प्रसिद्धी दूर दूर तक थी और उनकी यहां बहुत

दुकाने थी। क”मीर का सबसे हैरानीजनक कारीगरी का काम अखरोट की लकड़ी पर खुदाई का काम था। दस्तकारी के इलावा क”मीर जैसे फल भी किसी और जगह पर नही मिलते थे। यहां के मेवे, अलूचे और आलू बुखारे आदि को खास प्रसिद्वता हासिल थी। रणजीत सिंह के समय श्रीनगर यहां की शालों और प”ामीना के लिए संसार में प्रसिद्व हो गया।

वजीराबाद

पाकिस्तान में मौजूदा गुजरांवाला के उत्तर पि”चम की तरफ 1 मील पर दरिया चनाब के किनारे वजीराबाद स्थित है। वजीराबाद नगर वजीर खाँ जोकि शाहजहां के समय एक बड़ा अमीर था उसने इसे आबाद किया था और यह पे”ाावर से दिल्ली की तरफ जाती जरनैली सड़क पर होने के कारण मुख्य नगर बन गया था। परन्तु 17वीं और 18वीं शताब्दी में राजसी कारणों करके यह उजड़ गया था। 1809 ई. में यह नगर महाराजा रणजीत सिंह के अधीन हुआ और इसकी आबादी में बढोतरी हाने लगी। 1829 ई. में रणजीत सिंह ने इटालियन जरनैल ओवत बेला को वजीराबाद का गवर्नर नियुक्त किया। जिसने वजीराबाद नगर की योजना बना करके इसका एक नई किस्म का नगर बना दिया। उसने इस शहर को वि”ोष तौर पर सुधारा । उसने शहर की गलियों और बाजारों को नये सिरे से संगठित किया। उसके समय यह सीधा और चौड़ा बाजार जा एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाता था और छोटे बाजार विकसित हुए। उसकी गालियां और बाजार चौड़े और सुधरे हुए थे और मकान भी अच्छे बने हुए थे।

सटैन ब्रॉक

” निर्माण कला के पक्ष से वजीराबाद पंजाब के सब शहरों से उत्तम है। यह जरनैल ओवत बेला के यत्नों का परिणाम है। इसकी गलियां चौड़ी और बाजार बहुत खुले थे।

व्जीराबाद बेड़िया बनाने का केन्द्र रहा है। दरिया चनाब के किनारे एक बड़ी व्यापारिक मण्डी थी। दरिया चनाब से जेहलम तक बेड़ियां चलती थी। जिस करके दोनो तरफ से व्यापार होता था। जम्मू की तरफ लकड़ी, खण्ड चीनी, घी, कनक , मोटा कपड़ा, भेड़ों को खल आदि मुल्तान आदि भेजा जाता था। यहा से फिर डेरा बाबा गाजी खां के रास्ते काबुल जाती थी। जरनल ओवत बेला के समय यहां नील बनना भी शुरू हो गयी थी और कपड़ा भी बनता था। महाराजा रणजीत सिंह के समय यह पुनः निर्माण किया गया। शहर अंग्रेजों को इतना पसन्द आया कि उन्होने सारे इलाकों की राजधानी इसको बना दिया और फिर 1852 में वजीराबाद का गुजरावाला जिले को तहसील का केन्द्र बना दिया था।

गुजरावाला

जरनैली सड़क और पंजाब की राजधानी लाहौर से 42 मील उत्तर पि”चम की और स्थित गुजरावाला प्रफुल्लित नगर था। गुजरावाला की हौंद और विकास सिक्ख राज के साथ ही हुआ था और इसके विकास में रणजीत सिंह और उसके परिवार की वि”ोष देन थी। रणजीत सिंह के दादा चड़त सिंह ने ही यह नगर आबाद किया था। उसने अपने साथ लगते गांव से उठकर यहां कुए के साथ गांव आबाद किया। यह कुआं गुजरा का कुंआ होने के कारण इस स्थान का नाम गुजरावाला पड़ गया। महाराजा के पिता महां सिंह के समय आस पास से बहुत ज्यादा लोग यहां आकर बस बए। आगे चलकर यह नगर शुक्रचक्रिया मिसल की राजधानी बन गया था और व्यापार का भी प्रमुख नगर बन गया था। महाराजा रणजीत सिंह लाहौर जीतने से पहले यहां ही रहते थें।

महाराजा ने इस इलाके को बहुत प्रफुल्लित किया। महाराजा के समय बहुत सारे बड़े आदमी इस इलाके के साथा सम्बन्धित थे। जैसे हरी सिंह नलुआ, सावन मल, मिसर दीवान चन्द्र और जवाहर सिंह आदि। आगे चलकर यह नगर हरी सिंह नलुएं की जागीर में आ गया था और उसने इस नगर की उन्नति की तरफ वि”ोष ध्यान दिया। उसने यहां बाग भी लगवाए और एक 12 दरी बनाई। यहां विदे”ाी यात्रियों का स्वागत किया जाता था। यह इलाका संतरों के बाग के लिए प्रसिद्व था। हरी सिंह ने क”मीर में बसे पेड़ मंगवाकर इस धरती पर लगवाए थे। जरनैल अपनी बेलों में माल्टे के पेड़ लगवाकर पहली बार बाग तैयार किया और फिर यह सारे पंजाब में प्रचलित हो गये थे।

डेरा गाजी खाँ

महाराजा रणजीत सिंह के समय यह शहर भी बहुत महत्वता रखता है। यह शहर न केवल व्यापार की बड़ी मण्डी थी बल्कि पंजाब की रक्षा और राजसी दृष्टिकोण से भी उसकी बहुत अहमियत थी। इसको काबुल, कंधार और खुरासान का दरवाजा माना जाता था। यहां का बुना हुआ कपड़ा दूर दूर दे”ाों में जाकर बिकता था। कपड़े की दस्तकारी के इलावा यहां बनी तलवारे , छुरे, कटारे और कैंचियां बहुत प्रसिद्वता रखती है। रणजीत सिंह के समय इस शहर में व्यापारिक तौर पर भी बहुत उन्नति हुई थी। शहर में बहुत ही खुबसूरत फूलदार बाग थे। जिनमें खजूरों के बाग सबसे महत्वपूर्ण थे। इसके इलावा यहां 1838 में नील उपज भी होने लगी थी जिसकी ज्यादा खपत काबुल, बुखारा और पंजाब में होती थी। इसके इलावा इस इलाके में गन्ने की उपज भी बहुत होती थी। छोले, कनक और जौं यहा खास उपजते थे। जबकि चावल की पैदावार यहां कम ही होती थी।

बर्नज

” जब तक यह शहर अफगानों के कब्जे में रहा यहां के निवासियों पर और कई तरह के कर लगाए जाते थे और दूसरा चोरों व डाकुओं से बचाने का भी कोई प्रबन्ध नही था। परन्तु जब सिक्खों ने इसको अफगानों से जीत करके खालसा राज्य में मिला लिया। तब से यह शहर व्यापारियों की रक्षा का पक्का केन्द्र बन गया। रणजीत सिंह ने टैक्स बढाने की जगह सारे कर माफ कर दिये।

रणजीत सिंह के समय व्यापारियों की आवाजाई के लिए इस इलाके में अच्छी सड़के तैयार की गयी। अब बड़े बड़े कारवान तैयार होकर काबुल, कंधार और बुखारे तक जाते थे। बुखारा अफगानिस्तान और खुरासान से यहां बिकने के लिए घोड़े, कई तरह के रंग, फल, पिस्ता, बादाम, सौगी, गलीचे आदि आते थे। जोकि यहां से ही सारे पंजाब और हिन्द में और विलायत तक पहुंचते थे। इस शहर की महत्वत्ता इस बात से भी बढ कई कि विदे”ाो में जाने वाले काफिले यहां तैयार होकर ही कूच करते थे।

अटक

यह शहर बहुत पुराना था। इस शहर ने मुगलों के समय बड़ी प्रसिद्वता प्राप्त की थी। मुगल बाद”ााह पे”ाावर और काबुल जाते यहां जरूर अटकते थे। अपने रहने के लिए उन्होने यहां पक्की सराय और महल बनाए थे। वि”ोष करके अकबर ने 1583 ई. में यहां किला बनाया था और तभी से ही इस शहर की रौनक बढ गयी थी। खालसा राज के समय यह शहर मुगलों के समय से भी ज्यादा रमणीक हो गया था। यहां से दूर दूर तक फैले बाजारों से यह अनुभव हो जाता है कि उस समय यहां का व्यापार दूर दूर तक फैला

हुआ था। खालसा राज के समय यहां बेड़ियां बनाने का एक बड़ा कारखाना था। जहां यह कारखाने की जरूरतों को पूरा किया जाता था। वहां इसका व्यापार भी उन्नति पर पहुंचा हुआ था।

झंग

रणजीत सिंह के समय प्रफुल्लित हुए नगरों में से झंग भी खास प्रसिद्वता रखता है। यह शहर अमृतसर व्यापार के गढ और डेरा बाबा गाजी खां के बीच सबसे नजदीक शहर था। यहां बहुत सौदागर ठहरते थे। यहां बहुत ज्यादा वस्तुओं का व्यापार होता था। यहां मेले और मीना बाजार लगाए जाते थे। मेलों में माल बेचने के लिए लम्बे लम्बे गोदाम सरकार की तरफ से तैयार किये जाते थे और यहां के व्यापारियों के पास से बहुत नरम किराया लिया था।

गाँव दादान खाँ

रणजीत सिंह के समय कि"तयों व बेड़ियाँ बनाने का सबसे महत्वपूर्ण कारखाना दादान खाँ में था। यह दरिया जेहलम के किनारे पर स्थित था और यहां बेड़ियां बनाने की लकड़ी दरिया जेहलम द्वारा क"मीर से मिलती है।

References

1. बाबा प्रेम सिंह होती — सम्पादक डा. फौजा सिंह (पंजाब का सामाजिक इतिहास)
2. जे. एम. गरेवाल और इंदू बंगा — रणजीत सिंह (खालसा राज्य काल समय)
3 फौजा सिंह — महाराजा रणजीत सिंह के समय राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था
4 जे. एस गरेवाल — महाराजा रणजीत सिंह (राज्य व्यवस्था, अर्थचारा और समाज)
5 खु"ावन्त सिंह — सिक्ख इतिहास, भाग पहला लाहौर बुक भॉप, लुधियाना
6. तेजा सिंह गंडा सिंह — भारट हिस्टरी ऑफ द सिक्खस आरिएंट लौंगमैन, इंडिया 1950
7. एस. एन बैनर्जी — रणजीत सिह , लाहौर 1931
8. विलियम मॅरे — हिक्टरी ऑफ द पंजाब, विलियम ऐलन 1846 , लाहौर
9. एन. के सिन्हा — राइज ऑफ द सिख पावर, कलकत्ता, 1946
10. प्रिसेप — ऑरिजिन ऑफ द सिक्ख पावर द पंजाब, कलकत्ता 1954
11. पतवंत सिंह — द सिक्खस (पंजाब के सिक्खों का इतिहास) अमृतसर, 2009
12. कनिंधम — सिक्ख इतिहास, लाहौर बुक भॉप, 1997